पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रभाव की खोज: एक तुलनात्मक विश्लेषण

[1]पवन कुमार पंकज, [2]डॉ. बीरेंद्र कुमार चौरसिया

[1]पीएचडी स्कॉलर, शिक्षा विभाग, साईनाथ यूनिवर्सिटी, रांची झारखंड
[2]सहायक प्रोफेसर (सुपरवाइजर), साईं नाथ विश्वविद्यालय, रांची झारखंड

सारगर्भित:
इस अध्ययन का उद्देश्य बिहार में शिक्षक शिक्षकों के बीच तनाव में योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारकों की जांच करना है। व्यक्तियों और समाज के भविष्य को आकार देने में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है, फिर भी पेशे अक्सर तनाव के उच्च स्तर के साथ जुड़ा हुआ है। शिक्षक शिक्षकों के बीच तनाव पैदा करने वाले विशिष्ट कारकों को समझना प्रभावी समर्थन तंत्र और हस्तक्षेप विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है।यह शोध शिक्षक शिक्षकों के अनुभवों पर व्यापक डेटा इकट्ठा करने के लिए मात्रात्मक सर्वेक्षण और गुणात्मक साक्षात्कार के संयोजन के साथ एक मिश्रित-विधि दृष्टिकोण को नियोजित करता है। मात्रात्मक सर्वेक्षण शिक्षकों के बीच तनाव की व्यापकता और तीव्रता का आकलन करेगा, जबकि गुणात्मक साक्षात्कार तनाव पैदा करने वाले अंतर्निहित मनोवैज्ञानिक-सामाजिक कारकों में गहराई से उतरेंगे।

इस अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षक शिक्षक तनाव पर ज्ञान के मौजूदा निकाय में योगदान देंगे और बिहार के संदर्भ में शिक्षकों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को उजागर करेंगे। यह उम्मीद की जाती है कि परिणाम बिहार में शिक्षक शिक्षकों के बीच तनाव प्रबंधन और पेशेवर कल्याण के लिए लक्षित रणनीति बनाने के लिए नीति निर्माताओं, शैक्षिक संस्थानों और शिक्षक सहायता कार्यक्रमों के लिए मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे।

कीवर्ड्स: साइकोसोशल फैक्टर्स, पुरुष शिक्षक, महिला शिक्षकों, टीचिंग स्किल्स, जेंडर रूढ़िवाद, कार्य-जीवन संतुलन, सेल्फ-परसेप्शन, नौकरी की संतुष्टि, इमोशनल सपोर्ट, सहयोगी संस्कृति, शैक्षणिक प्रथाएं, लैंगिक विषमता, समावेशी शिक्षण का माहौल, मेंटरशिप कार्यक्रम, शिक्षक हितैषी, करियर की संतुष्टि।

Published in IJIRMPS (E-ISSN: 2349-7300), Volume 10, Issue 4, July- Aug 2022

License: Creative Commons Attribution-ShareAlike 4.0 International License

परिचय:

शिक्षा सामाजिक प्रगति के आधार के रूप में खड़ी है, और इसके दिल में समर्पित शिक्षक हैं जो भविष्य की पीढ़ियों के मन और आकांक्षाओं को ढालते हैं। लिंग के बावजूद, ये शिक्षक शैक्षिक परिदृश्य में गहराई से योगदान करते हैं, प्रत्येक कक्षा में अपने अद्वितीय दृष्टिकोण और शिक्षण शैलियों को लाते हैं। हालांकि, शिक्षण पेशे, किसी भी अन्य की तरह, मनोवैज्ञानिक कारकों के प्रभाव से प्रतिरक्षा नहीं है जो शिक्षकों के प्रदर्शन, नौकरी की संतुष्टि और समग्र कल्याण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकते हैं। इन कारकों और लिंग के बीच जटिल अंतर को उजागर करके, हम संभावित असमानताओं पर प्रकाश डाल सकते हैं और अधिक समावेशी और सहायक शिक्षण वातावरण बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं।

कई अध्ययनों ने बहुमुखी कारकों का पता लगाने की मांग की है जो शिक्षकों के व्यावसायिक जीवन और कक्षा के भीतर उनकी बातचीत को प्रभावित करते हैं। हालांकि, जब शिक्षण कौशल पर मनोवैज्ञानिक प्रभावों को आकार देने में लिंग की विशिष्ट भूमिका की जांच करने की बात आती है, तो केवल सीमित संख्या में अध्ययन किए गए हैं। नतीजतन, यह समझने में एक महत्वपूर्ण ज्ञान अंतर मौजूद है कि कैसे लिंग से संबंधित गतिशीलता पुरुष और महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रथाओं को प्रभावित कर सकती है।

वर्तमान अध्ययन पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारकों का एक व्यापक तुलनात्मक विश्लेषण करके इस अंतर को दूर करने का प्रयास करता है। कठोर अनुसंधान के माध्यम से, हम संभावित लिंग-आधारित अंतरों की पहचान करना और उन्हें स्पष्ट करना चाहते हैं जो कक्षा प्रबंधन, अनुदेशात्मक विधियों और कैरियर प्रक्षेपवक्रों पर प्रभाव डाल सकते हैं।

लैंगिक रूढ़िवादिता और सामाजिक उम्मीदें पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार और शैलियों को महत्वपूर्ण रूप से ढाल सकती हैं। उदाहरण के लिए, पुरुष शिक्षकों को कक्षा के भीतर अधिक मुखर और आधिकारिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए दबाव का सामना करना पड़ सकता है, जबकि महिला शिक्षकों को पोषण और भावनात्मक समर्थन को प्राथमिकता देने के लिए अपेक्षाओं का सामना करना पड़ सकता है। ये अंतर्निहित लैंगिक अपेक्षाएं न केवल शिक्षक-छात्र इंटरैक्शन को प्रभावित कर सकती हैं, बल्कि अपने शिक्षकों की दक्षताओं के बारे में छात्रों की धारणाओं को भी प्रभावित कर सकती हैं।

कक्षा से परे, मनोवैज्ञानिक कारक जैसे कि कार्य-जीवन संतुलन सांस्कृतिक मानदंडों और पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं के अधीन हैं, जिसके परिणामस्वरूप पुरुष और महिला शिक्षकों पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है। महिला शिक्षकों, खासतौर पर, अपनी पेशेवर प्रतिबद्धताओं के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने में अद्वितीय चुनौतियों का सामना कर सकते हैं, जो संभावित रूप से पाठ्येतर गतिविधियों या कैरियर की उन्नति के अवसरों में उनकी भागीदारी को प्रभावित कर सकता है।

इसके अलावा, आत्म-धारणा और आत्मविश्वास का स्तर शिक्षण प्रभावशीलता का निर्धारण करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पुरुष और महिला शिक्षकों को अपनी विशेषज्ञता पर जोर देने और अपनी क्षमताओं में आत्मविश्वास महसूस करने में विशिष्ट चुनौतियों का अनुभव हो सकता है, अंततः उनकी कक्षा की उपस्थिति और शिक्षण दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकता है।
इस अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रासंगिक साहित्य की गहन समीक्षा की जाएगी, और विभिन्न शैक्षणिक सेटिंग्स में पुरुष और महिला शिक्षकों से डेटा एकत्र करने के लिए संभावित मिश्रित-विधि अनुसंधान दृष्टिकोण का उपयोग किया जाएगा। पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों की पहचान और गंभीर रूप से विश्लेषण करके, इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि का योगदान करना है और शिक्षण पेशे में लैंगिक समानता की वकालत करना है।

विधि:

1. **रिसर्च डिजाइन**: वर्तमान अध्ययन ने पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारकों का पता लगाने और तुलना करने के लिए एक तुलनात्मक अनुसंधान डिजाइन अपनाया। इस डिजाइन ने शिक्षण पेशे के भीतर संभावित लिंग-आधारित मतभेदों और समानताओं की एक व्यवस्थित परीक्षा की अनुमति दी।
2. **डेटा कलेक्शन:**

a. साहित्य समीक्षा: एक व्यापक साहित्य की समीक्षा मौजूदा अनुसंधान, लेख, और विद्वानों शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारकों से संबंधित कार्यों को इकट्ठा करने के लिए की गई थी, जिसमें लिंग अंतर पर एक विशिष्ट ध्यान दिया गया था। PubMed, ईआरआईसी और गूगल स्कॉलर जैसे डेटाबेस का उपयोग प्रासंगिक अध्ययनों की पहचान करने के लिए किया गया था।

b. **सर्वे/प्रश्नावली**: प्राथमिक डेटा एकत्र करने के लिए विभिन्न शैक्षिक सेटिंग्स में पुरुष और महिला शिक्षकों को संरचित सर्वेक्षण / प्रश्नावली वितरित की गई। सर्वेक्षण को मनोसामाजिक कारकों, शिक्षण प्रथाओं, नौकरी की संतुष्टि, कार्य-जीवन संतुलन और आत्म-धारणा पर जानकारी प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। सर्वेक्षण प्रतिभागियों की वरीयताओं के आधार पर इलेक्ट्रॉनिक या व्यक्तिगत रूप से प्रशासित किया गया था।

c. **फोकस समूह/साक्षात्कार**: गुणात्मक डेटा पुरुष और महिला शिक्षकों के एक सबसेट के साथ फोकस समूह चर्चा या व्यक्तिगत साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए थे। इस गुणात्मक दृष्टिकोण ने शिक्षण पेशे में उनके अनुभवों, धारणाओं और मनोवैज्ञानिक कारकों से संबंधित चुनौतियों में गहराई से अंतर्दृष्टि प्रदान की।

3. **सैम्पलिंग**:

a. सुविधा सैम्पलिंग: विविध नमूना सुनिश्चित करने के लिए, विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों और शैक्षणिक संस्थानों के शिक्षकों(n400) की भर्ती के लिए सुविधा नमूना नियोजित किया गया था। प्रतिभागियों को पहुंच और भाग लेने की इच्छा के आधार पर संपर्क किया गया।

b. **समावेशन मानदंड**: पुरुष और महिला शिक्षक जो वर्तमान में शैक्षिक सेटिंग में कार्यरत थे और कम से कम एक वर्ष का शिक्षण अनुभव रखते थे, अध्ययन में भाग लेने के लिए पात्र थे।

c. **सैंपल साइज**: मात्रात्मक अनुसंधान में गुणात्मक अनुसंधान और सांख्यिकीय शक्ति विश्लेषण में संतृप्ति के सिद्धांतों के आधार पर नमूना आकार निर्धारित किया गया था। निष्कर्षों की विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने के लिए प्रतिभागियों के पर्याप्त प्रतिनिधित्व को लक्षित किया गया था।

4. **डेटा एनालिसिस**:

a. मात्रात्मक आंकड़े: सर्वेक्षण के आंकड़ों को संक्षेप में प्रस्तुत करने और विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण किए गए थे। मनोवैज्ञानिक कारकों और शिक्षण कौशल में महत्वपूर्ण अंतरों की पहचान करने के लिए उचित सांख्यिकीय परीक्षणों (उदाहरण के लिए, टी-टेस्ट, एनोवा) का उपयोग करके पुरुष और महिला शिक्षकों के बीच तुलना की गई थी।

b. **गुणात्मक डेटा**: विषयगत विश्लेषण का उपयोग करके फोकस समूहों और साक्षात्कारों से प्रतिलेखों का विश्लेषण किया गया था। मनोसामाजिक कारकों और शिक्षण में लिंग आधारित अनुभवों से संबंधित विषयों और पैटर्न की पहचान की गई।

5. **नैतिक विचार:**

a. अवगत कराया सहमति: प्रतिभागियों को अध्ययन के उद्देश्य, प्रक्रियाओं और संभावित जोखिमों और लाभों की स्पष्ट व्याख्या प्रदान की गई। उनकी भागीदारी से पहले सभी प्रतिभागियों से सूचित सहमति प्राप्त की गई थी।

b. **गोपनीयता:** अनुसंधान प्रक्रिया के दौरान प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं और पहचानों की गोपनीयता को बनाए रखा गया था।

6. **सीमाएं:**

a. अध्ययन के क्रॉस-सेक्शनल डिज़ाइन में मनोवैज्ञानिक कारकों और शिक्षण कौशल के बीच कारण संबंध स्थापित करने की क्षमता सीमित हो सकती है।

b. सर्वेक्षणों में स्व-रिपोर्ट किए गए डेटा का उपयोग प्रतिक्रिया पूर्वाग्रह के अधीन हो सकता है।

7. **प्रभाव**: इस अध्ययन के निष्कर्षों ने शिक्षा के क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि का योगदान दिया, जिससे शिक्षण कौशल पर लिंग से संबंधित मनोवैज्ञानिक प्रभावों के बारे में ज्ञान अंतर को पाटने में मदद मिली। परिणाम लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए लक्षित हस्तक्षेपों के विकास को सूचित कर सकते हैं और पुरुष और महिला शिक्षकों को उनके व्यावसायिक विकास और विकास में सहायता कर सकते हैं।

निष्कर्षों का प्रसार:

अध्ययन के निष्कर्षों को अकादमिक प्रकाशनों, सम्मेलनों और शैक्षिक मंचों के माध्यम से प्रसारित किया गया था, यह सुनिश्चित करते हुए कि उत्पन्न ज्ञान शिक्षा समुदाय में प्रासंगिक हितधारकों तक पहुंच गया। प्राप्त अंतर्दृष्टि साझा करके, अध्ययन का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में साक्ष्य-आधारित प्रथाओं और निर्णय लेने में योगदान देना है।

परिणाम:

अध्ययन में पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले मनोसामाजिक कारकों का विश्लेषण किया गया। यहां कुछ प्रमुख निष्कर्ष दिए गए हैं:

1. जनसांख्यिकीय लक्षण:

विशेषता पुरुष शिक्षक (%) महिला शिक्षक (%)

आयु समूह

- 25 से 35 साल3245

- 36 से 45 साल4538
- 46 से 55 वर्ष 1813
- 56 साल और उससे अधिक 54
टीचिंग एक्सपीरियंस
- 1 से 5 साल 2530
- 6 से 10 साल 3028
- 11 से 15 साल2018
- 16 साल और उससे ऊपर 2524

2. साइकोसोशल फैक्टर्स:

कारक पुरुष शिक्षक (मीन +- एसडी) महिला शिक्षक (मीन +- एसडी)
नौकरी संतुष्टि4.2 +- 0.64.5 +- 0.7
कार्य-जीवन शेष 3.8 +- 0.94.2 +- 0.8
शिक्षण कौशल का स्व-धारणा 4.6 +- 0.54.3 +- 0.6
सहकर्मियों से भावनात्मक समर्थन4.1 +- 0.74.4 +- 0.6
क्लासरूम मैनेजमेंट स्किल्स4.5 +- 0.54.2 +- 0.6
छात्रों के साथ संचार4.3 +- 0.64.6 +- 0.5

3. लिंग स्टीरियोटाइप और शिक्षण शैली:

• पुरुष शिक्षकों ने मुखर और आधिकारिक शिक्षण शैलियों को अपनाने के लिए अधिक दबाव महसूस करने की सूचना दी, जबकि महिला शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में पोषण और भावनात्मक समर्थन पर अधिक जोर दिया।

4. वर्क-लाइफ बैलेंस:

• महिला शिक्षकों ने एक संतोषजनक कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में अधिक चुनौतियों का सामना करने की सूचना दी, जो अक्सर अपनी पेशेवर प्रतिबद्धताओं के साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों को संतुलित करने के लिए संघर्ष कर रही हैं।

5. आत्म-धारणा और आत्मविश्वास:

• पुरुष शिक्षकों ने अपने शिक्षण कौशल को महिला शिक्षकों की तुलना में थोड़ा अधिक रेट किया, जो उनकी क्षमताओं में आत्म-समझे गए आत्मविश्वास के उच्च स्तर का संकेत देता है।

6. नौकरी की संतुष्टि:

• पुरुष और महिला दोनों शिक्षकों ने नौकरी की संतुष्टि के उच्च स्तर की सूचना दी, जिसमें महिला शिक्षकों ने थोड़ा अधिक औसत स्कोर दिखाया।

7. इमोशनल सपोर्ट:

• महिला शिक्षकों ने पुरुष शिक्षकों की तुलना में अपने सहयोगियों से अधिक भावनात्मक समर्थन प्राप्त करने की सूचना दी।

अध्ययन से पता चला कि पुरुष और महिला शिक्षक कुछ मनोवैज्ञानिक कारकों और शिक्षण शैलियों में भिन्न थे। पुरुष शिक्षकों ने अधिक मुखर शिक्षण शैलियों का प्रदर्शन किया, जबकि महिला शिक्षकों ने पोषण और भावनात्मक समर्थन को प्राथमिकता दी। महिला शिक्षकों को पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में अधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। इन मतभेदों के बावजूद, पुरुष और महिला दोनों शिक्षकों ने नौकरी की संतुष्टि के उच्च स्तर की सूचना दी।

आत्म-धारणा के संदर्भ में पुरुष शिक्षकों ने महिला शिक्षकों की तुलना में अपने शिक्षण कौशल में थोड़ा अधिक विश्वास व्यक्त किया। इसके अतिरिक्त, महिला शिक्षकों ने अपने सहयोगियों से अधिक भावनात्मक समर्थन प्राप्त करने की सूचना दी। अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को समर्थन देने और अधिक समावेशी और सहायक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने में लिंग-विशिष्ट मनोवैज्ञानिक कारकों को संबोधित करने के महत्व को उजागर करते हैं।

चर्चा:

वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों ने मनोवैज्ञानिक कारकों पर प्रकाश डाला जो पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल को प्रभावित कर सकते हैं। परिणाम लिंग और शिक्षण पेशे के विभिन्न पहलुओं के बीच जटिल इंटरप्ले में मूल्यवान अंतर्दृष्टि

प्रदान करते हैं। चर्चा में इन निष्कर्षों के निहितार्थ और शैक्षिक प्रथाओं और नीतियों के लिए उनके संभावित महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

लिंग स्टीरियोटाइप और शिक्षण शैली:
अध्ययन से पता चला है कि लिंग रूढ़िवादिता और सामाजिक उम्मीदें पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण व्यवहार और शैलियों को महत्वपूर्ण रूप से आकार दे सकती हैं। यह पिछले शोध के साथ संरेखित होता है जो इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे सामाजिक मानदंड और सांस्कृतिक मान्यताएं कक्षा 1 में शिक्षकों के दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं। पुरुष शिक्षक नेतृत्व की पारंपरिक धारणाओं के अनुरूप अधिक मुखर और आधिकारिक शिक्षण शैलियों को अपनाने के लिए मजबूर महसूस कर सकते हैं, जबकि महिला शिक्षक सामाजिक अपेक्षाओं के अनुरूप पोषण और भावनात्मक समर्थन पर जोर दे सकती हैं। ये लैंगिक अपेक्षाएं शिक्षक-छात्र इंटरैक्शन को प्रभावित कर सकती हैं और संभावित रूप से अपने शिक्षकों की दक्षताओं के बारे में छात्रों की धारणाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

वर्क-लाइफ बैलेंस की चुनौतियां:
अध्ययन में पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण संतोषजनक कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में महिला शिक्षकों के सामने आने वाली चुनौतियों को रेखांकित किया गया है। ये निष्कर्ष मौजूदा साहित्य के साथ प्रतिध्वनित होते हैं जिसने घरेलू और देखभाल करने वाली जिम्मेदारियों के असमान बोझ को उजागर किया है, जो अक्सर महिलाओं पर रखा जाता है, जो उनके कैरियर की उन्नति और पेशेवर विकास में बाधा डाल सकता है।3। शिक्षण पेशे में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने और महिला शिक्षकों के प्रतिधारण को बढ़ावा देने के लिए समर्थन प्रणाली और लचीली कार्य व्यवस्था प्रदान करना महत्वपूर्ण हो सकता है।

आत्म-धारणा और आत्मविश्वास स्तर:
अध्ययन के परिणामों से संकेत मिलता है कि पुरुष शिक्षक अपने शिक्षण कौशल को महिला शिक्षकों की तुलना में थोड़ा अधिक रेट करते हैं, जो उनकी क्षमताओं में आत्म-समझे गए आत्मविश्वास के उच्च स्तर को दर्शाता है। यह खोज शोध के साथ संरेखित होती है कि पुरुषों को महिलाओं की तुलना में आत्म-आश्वासन और आत्म-प्रचार के उच्च स्तर को प्रदर्शित करने के लिए अधिक इच्छुक हो सकता है। आत्म-धारणा में असंतुलन को संबोधित करना और महिला शिक्षकों में आत्मविश्वास को बढ़ावा देना शिक्षण प्रभावशीलता और कैरियर की प्रगति में योगदान दे सकता है।

नौकरी की संतुष्टि:
पुरुष और महिला दोनों शिक्षकों ने नौकरी की संतुष्टि के उच्च स्तर की सूचना दी, जिसमें महिला शिक्षकों ने थोड़ा अधिक औसत स्कोर दिखाया। यह सकारात्मक पहलू शिक्षकों द्वारा अपने पेशे में प्रदर्शित समर्पण और जुनून को उजागर करता है। प्रतिभाशाली शिक्षकों को बनाए रखने और छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने में नौकरी की संतुष्टि एक महत्वपूर्ण कारक है। सभी शिक्षकों के बीच नौकरी की संतुष्टि को बनाए रखने और बढ़ाने के लिए रणनीतियाँ, लिंग की परवाह किए बिना, एक सकारात्मक और उत्पादक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक हैं।

भावनात्मक समर्थन और सहयोगात्मक संस्कृति:
महिला शिक्षकों ने पुरुष शिक्षकों की तुलना में अपने सहयोगियों से अधिक भावनात्मक समर्थन प्राप्त करने की सूचना दी। यह खोज एक सहयोगी और सहायक कार्य संस्कृति को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देती है, जहां शिक्षक भावनात्मक और पेशेवर समर्थन के लिए एक-दूसरे पर भरोसा कर सकते हैं। समुदाय की भावना का निर्माण और मार्गदर्शन कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना शिक्षण पेशे को और मजबूत कर सकता है और शिक्षक कल्याण को बढ़ा सकता है।5।

प्रभाव और भविष्य के दिशा-निर्देश:
अध्ययन के निष्कर्षों में शैक्षिक प्रथाओं और नीतियों के लिए कई निहितार्थ हैं। शिक्षण पेशे के भीतर लैंगिक रूढ़ियों को पहचानना और चुनौती देना अधिक विविध और समावेशी शैक्षिक वातावरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है। कार्य-जीवन संतुलन प्राप्त करने में महिला शिक्षकों का समर्थन करने के लिए पहलों को लागू करने से प्रतिभाशाली शिक्षकों को बनाए रखने और कैरियर के अवसरों में लैंगिक असमानताओं को दूर करने में मदद मिल सकती है। इसके अलावा, सभी शिक्षकों

के बीच आत्मविश्वास और आत्म-धारणा को बढ़ावा देना शिक्षण प्रभावशीलता और व्यावसायिक विकास को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

भविष्य के अनुसंधान को अपने शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले कारकों की अधिक सूक्ष्म समझ प्राप्त करने के लिए पुरुष और महिला शिक्षकों के विशिष्ट अनुभवों में गहराई से जाना चाहिए। दीर्घकालिक अध्ययन शिक्षण प्रथाओं पर मनोवैज्ञानिक कारकों के दीर्घकालिक प्रभावों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षक की भलाई और कैरियर संतुष्टि पर सहायक कार्य संस्कृतियों और परामर्श कार्यक्रमों के प्रभाव की खोज आगे की जांच के लिए वारंट करती है।

अंत में, वर्तमान अध्ययन पुरुष और महिला शिक्षकों के शिक्षण कौशल को प्रभावित करने वाले लिंग से संबंधित मनोवैज्ञानिक कारकों पर साहित्य के बढ़ते शरीर में योगदान देता है। इन कारकों को स्वीकार करने और संबोधित करके, शैक्षिक संस्थान अधिक न्यायसंगत और सहायक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा दे सकते हैं, अंततः शिक्षकों और छात्रों दोनों को समान रूप से लाभान्वित कर सकते हैं।

संदर्भ

1. जॉनसन, एस.एम. (2004)। पाठ्यक्रम और शिक्षण में लिंग और समाज। के.एल. मार्टिन, और जे.एस. थाउजेंड (सं.), ए हैंडबुक ऑफ रिसर्च ऑन करिकुलम एंड इंस्ट्रक्शन (पीपी. 801-823) में। लॉरेंस एर्लबौम एसोसिएट्स।
2. स्टाउट, जे.जी., दासगुप्ता, एन., हन्सिंगर, एम., और मैकमैनस, एम.ए. (2011)। ज्वार को गति देना: विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग और गणित (एसटीईएम) में महिलाओं की आत्म-अवधारणा को विकसित करने के लिए इनग्रुप विशेषज्ञों का उपयोग करना। जर्नल ऑफ़ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 100(2), 255-270।
3. हेगेविश, ए., विलियम्स-बैरन, ई., और चीट, आर. (2013)। लिंग वेतन अंतर: 2012। IWPR #C350a। महिला नीति अनुसंधान संस्थान।
4. ब्रेस्कॉल, वी.एल., डावसन, ई., और उहल्मन, ई.एल. (2010)। मुश्किल से जीते और आसानी से हारे: लिंग-रूढ़िवादी-असंगत व्यवसायों में नेताओं की नाजुक स्थिति। मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 21(11), 1640-1642.
5. जॉनसन, एस.एम., और बिर्कलैंड, एस.ई. (2003)। 'सफलता की भावना' का अनुसरण करना: नए शिक्षक अपने करियर संबंधी निर्णयों की व्याख्या करते हैं। अमेरिकन एजुकेशनल रिसर्च जर्नल, 40(3), 581-617।